

व्यायाऽऽपुकारं हेत्यै धनुष्कारं कर्मणे ज्याकारं दिष्टाय रज्जुसर्जं मृत्यवे
मृगयुमन्तकाय श्वनिनम् ॥ ७ ॥

तपसे कौलालं कुलालापत्यम् २१. मायायै कर्मारं लोहकारम् २२. वृषाय
मणिकारं रत्नकर्तारम् २३. शुभे शुभाय वपं वीजवत्तारम् २४. शरव्यायै इषुकारं
वाणकर्तारम् २५. हेत्यै धनुःकारं चापकारिणम् २६. कर्मणे ज्याकारं प्रत्यञ्चन-
कर्तारम् (4.) २७. दिष्टाय रज्जुसर्जं रज्जोः स्रष्टारं निर्मातारम् २८. मृत्यवे मृगं
मृगयाहम् २९. अन्तकाय श्वनिनं श्वनो नेतारम् ३०. ॥ ७ ॥

नदीभ्यः पौञ्जिष्ठमृत्तीकाभ्यो नैषादं पुरुषव्याघ्राय दुर्मदं गन्धर्वाप्सरोभ्यो
व्रात्यं प्रयुग्भ्य उन्मत्तं सर्पदेवजनेभ्योऽप्रतिपदमयेभ्यः कितवमीर्यताया
ऽअकितवं पिशाचेभ्यो बिदलकारीं यातुधानेभ्यः कण्टकीकारीम् ॥ ८ ॥

नदीभ्यः पौञ्जिष्ठं (5.) पुञ्जिष्ठोऽव्यजः (6.) पुलकसस्तदपत्यम् ३१. ऋत्तीकाभ्यो
नैषादं निषादपुत्रम् ३२. पुरुषव्याघ्राय दुर्मदमुन्मत्तम् ३३. गन्धर्वाप्सरोभ्यो व्रात्यं
सावित्रीपतितम् ३४. प्रयुग्भ्यः उन्मत्तम् ३५. सर्पदेवजनेभ्यः अप्रतिपदं प्रतिपद्यते
ज्ञातानीति प्रतिपत् अतथाविधं विकलमित्यर्थः ३६. अयेभ्यः कितवं द्यूतकारम्
३७. ईयतायै अकितवमद्यूतकृतम् ३८. पिशाचेभ्यः बिदलकारीं (7.) वंशविदारि-
णीं वंशपात्रकारिणीम् ३९. यातुधानेभ्यः कण्टकीकारीं कण्टकी-कर्म तत्कारि-
णीम् (8.) ४०. ॥ ८ ॥

संधये जारं गेह्यायोपपतिमात्यै (9.) परिवित्तं निर्ऋत्यै परिविविदानमरा-
द्धाऽऽदिधिषुःपतिं निष्कृत्यै पेशस्कारीं संज्ञानाय स्मरकारीं प्रकामो-
द्यायोपसदं वर्णीयानुरुधं बलायोपदाम् ॥ ९ ॥

संधये जारमुपपतिम् ४१. गेह्याय उपपतिं व्यभिचारिणम् ४२. आत्यै परिवि-
त्तम् ऊठे कनिष्ठेऽनूठम् ४३. निर्ऋत्यै परिविविदानम् अनूठे ज्येष्ठे ऊठवन्तम् ४४.
अराद्धौ (10.) देव्यै ऋदिधिषुःपतिम् ज्येष्ठायां पुत्र्यामनूठायामूठा ऋदिधिषुः तत्पतिम्
४५. निष्कृत्यै पेशस्कारीं वृषकर्त्रीम् ४६. संज्ञानाय स्मरकारीं कामदीप्तिकरीम् ४७.